International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 4, July.-August, 2024, Impact Factor: 8.376

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें और आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

श्रीमती सरिता शर्मा[1], प्रिया चौधरी[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज,
[2]बी.एड. एम.एड, छात्रा बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज,

सारांश

विद्यार्थी जीवन में सफलता और असफलता सफलता एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। विद्यार्थी सफलता व असफलता को किस तरह से स्वीकारता है यह सभी विद्यार्थी द्वारा निर्धारित आकांक्षा स्तर पर निर्भर करता है।विद्यार्थी किसी भी लक्ष्य के लिए किए गए प्रथम प्रयास में ही अपने आकांक्षा स्तर का निर्धारण व परिवर्तन कर लेता है। सामाजिक , आर्थिक स्तर से बहुत ऊँचा आकांक्षा स्तर बनाने पर आवश्यक योग्यताओं के अभाव में जब वह असफलता प्राप्त करना है तो उसका समायोजन प्रभावित होता है। अतः शिक्षा व्यवस्था एसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी योग्यता व कौशलों के अनुरूप आकांक्षा स्तर का निर्धारण कर सके।विद्यालय में अद्ययनरत सभी विद्यार्थी बाह्य रूप से लगभग एकसमान दिखायी देते है किंतु सूक्ष्म रूप में प्रत्येक विद्यार्थी एक दूसरे से अवयव एव अनुभूति दोनों दृ ष्टि से सर्वतःभिन्न होती है प्रत्येक प्राणी में आकांक्षा नामक एक शीलगुन होता है जी उसे स्वयं के भविष्य के संदर्भ में विभिन्न योजनाओं एवं उद्देश्यों का निर्धारण एवम् निरूपण करने में सहायता होती है लेकिन जब प्राणी अपना शैक्षिक जीवन जी रहा होता है तो वह इसी शीलगुन की सहायता में अपने शैक्षिक जीवन उपलब्धि से संबंधित उद्देश्यों का निर्धारण करता है। प्रारंभ में निर्धारण उद्देश्य काल्पनिक स्वरूप के होते है लेकिन धीरे– धीरे वह वास्तविक का रूप ग्रहण करने लगते है। इसके साथ साथ एक विद्यार्थी के लिए अच्छे शैक्षणिक जीवन को प्राप्त करने के लिए अच्छी आदतों का होना महत्वपूर्ण माना जाता है। बालक की अच्छी आदतों को विकसित करना उसके व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देता है।

की वर्डः– अध्ययन की आदतें, आकांक्षा स्तर, राजकीय विद्यालय–

प्रस्तावना

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म लेने के बाद से मृत्यु की अंतिम घड़ी तक अपनी आत्मिक चेतना तथा अनुभूति क्षमता के फलस्वरूप जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के साथ अनुकूलन समायोजन तथा व्यवस्थिकरण करता है। इस ढंग से जीवन चलते रहने के फलस्वरूप मनुष्य विभिन्न प्रकार के अनुभव तथा अनुभवों से समझदारी एवं ज्ञान प्राप्ति ही नहीं करता बल्कि उनका सोद्देश्य संचय भी करता जाता है। ऐसी उपलब्धि मानव द्वारा ही संभव होती है और इसे वह आजीवन धारण करने की क्षमता रखता है। शिक्षा में विकास से व्यक्तियों में आकांक्षा स्तर बढ़ता है तथा शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी व्यक्तित्व के गुणों का विकास करता है। शिक्षा सर्वांगीण विकास की कुंजी है। शिक्षा मानव के जीवन को उन्नति एसदाचार ए सत्य और सभ्यता के उच्च शिखर पर ले जाती है। शिक्षा का प्रकाश व्यक्ति के सब सशंयो का उन्मूलन और उनकी सब बाधाओं का निवाकरण करता है। शिक्षा से प्राप्त अंतर्दृष्टि व्यक्ति की बुद्धि एविवेक और कुशलता में वृद्धि करती है। शिक्षा व्यक्ति को वास्तविक शक्ति से संपन्न करती है उसके सुख एसुयश एवं समृद्धि में योग देती है एउसे जीवन से यथार्थ महत्व को समझने की क्षमता प्रदान करती है। इसलिए शिक्षा से ही कोई समाज सर्वांगीण विकास के सोपान पर स्थापित होता है। समाज एवं देश के उत्थान एवं पतन का उत्तरदायित्व शिक्षा के कंधों पर ही होता है। नीव जितनी गहरीए भवन की उतनी ही अधिक सुदृढ़ता व क्षमता होगी। भौतिक और आध्यात्मिक विकास की बुनियादी आवश्यकता के लिए शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा मनुष्य है समुदाय की स्वाभाविक विशेषता रही है ए उसने सामाजिक विकास के हर युग में समाज को दिशा और सरूप देने में सहायता दी है शिक्षा मनुष्य के सर्वोच्च आदर्शों को और उसकी उपलब्धियों की रक्षा करने का उत्तम कार्य करती है। यह ज्ञान शक्ति के वर्तमान संग्रह में वृद्धि करके और इस प्रकार भविष्य को भूतकाल बनाने की संभावना का सर्वोत्तम कार्य करती है। शिक्षा मानव को इस योग्य बनाती है कि वह अपने आप को अपनी संस्कृति की सहायता से आध्यात्मिक सीमाओं में विस्तृत करता है। शिक्षा मूल प्रकृति में बदलती है। शिक्षा मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाती है। शिक्षा मानव सभ्यता का प्रथम सोपान है। आधुनिक युग में शिक्षा के बिना मानव के अस्तित्व की कल्पना करना कठिन है। इस युग में सभी क्षेत्रों में नवीनता का पदर्पण होने से सामाजिक बदलाव की गति तेज होती जा रही है और प्रजातांत्रिक परिवेश में व्यक्ति के पीछे स्वतंत्र एवं उन्मुक्त विचारों की अवधारणा प्रबल होती जा रही है। शिक्षा मानव को आत्मनिर्भर बनाती।

समस्या का औचित्य–

शिक्षा एक सहज एव स्वाभाविक क्रिया है एजो जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक चलती रहती है। केवल ज्ञान अर्जित करना ही शिक्षा नहीं है बल्कि व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना शिक्षा है। भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के सर्वांगीण

विकास की बात कही है। यदि किसी देश को अपनी प्रगती की बढ़ानी है तो उसे सर्वप्रथम अपने यहाँ निरक्षरता को समाप्त करना होगा। इसके लिए शिक्षण व्यवस्था एवं प्रणाली में सुधार लाना होगा।

भारत एक विकासशील देश है। यहाँ अशिक्षा देश की प्रगति में बाधक सिद्ध हो रही है। अतः शिक्षा के प्रचार.प्रसार के लिए सरकारी संस्थाओं के साथ कई निजी संस्थाएं भी शिक्षा के कार्य कर रही है।

सम्बन्धित साहित्य :

- **पटेल (2023)** ने गुजरात राज्य के खेड़ा जनपद के कक्षा 8 के 76 विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि बौद्धिक रूप से पिछड़े ग्रामीण अथवा शहरी दोनों क्षेत्रों की बालिकाओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, यद्यपि सामान्य रूप में यह अन्तर विद्यमान है।
- **वर्मा (2022)** ने माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व और आकांक्षा स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया। शोध कार्य के उद्देश्य थे – 1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर जाति, व्यक्तित्व एवं इनकी अंतक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना। 2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर जाति, आकांक्षा स्तर एवं इनकी अंतक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना। न्यादर्श के रुप में इन्दौर शहर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विजय नगर के कक्षा सातवी एवं आठवी के 25 अनुसूचित जाति एवं 25 अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का चयन दैव न्यादर्श पद्धति से किया गया। शोध के निष्कर्ष प्राप्त हुए – 1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। 2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर जाति एवं व्यक्तित्व की अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया।
- **देव एवं ग्रवाल (2021)** ने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के सत्र 1985–86 के बी०एम०मी० (गृहविज्ञान) के अन्तिम वर्ष में 90 विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि केवल विषयों के चयन को छोडकर अध्ययन आदतों के सभी पक्षों के साथ शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।
- **राज्यगुरू (2019)** ने गुजरात राज्य के भावनागर के कक्षा 8 के 183 विद्यार्थियों के न्यादर्श पर अध्ययन करके पाया कि अध्ययन आदतों के द्वारा गणित में उपलब्धि का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। ।
- **सिंह (2018)** ने उत्तर प्रदेश राज्य के जौनपुर जनपद के कक्षा 6 के 200 विद्यार्थियों पर अध्ययन करके पाया कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी विषयगत उपलब्धि पर घनिष्ठ प्रभाव पड़ता है। ।

साहित्य विवेचन :–
इस अध्याय में प्रस्तुत विभिन्न शोधों के आलोचनात्मक सर्वेक्षण से यह स्पष्ट है कि शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित भारत तथा विदेशों में बहुत शोध कार्य सम्पन्न किये गये हैं यद्यपि कुछ शैक्षिक रूचि पर सम्पादित किये हैं जैसे–**पटेल (2023), वर्मा (2022), देव एवं ग्रवाल (2021), राज्यगुरू (2019), सिंह (2018)** आदि है।

इस प्रकार शोधार्थी को शोध समस्या के उद्देश्य निर्धारित करने में अध्ययन की योजना बनाने, उपकरण का निर्माण करने, न्यादर्श का चयन करने एवं शोध प्रतिवेदन की रूपरेखा बनाने में उल्लेखनीय सहायता मिली है।

समस्या कथन–
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें और आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध के उद्देश्य–

1- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों एवं आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों में तुलनात्मक अध्ययन करना।
2- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों के माध्य फलांको में तुलनात्मक अध्ययन करना एजबकी लिंग को सहचर के रुप में लिया जाएगा।

अध्ययन की परिकल्पनाएं–

1- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों एवं आकांक्षा स्तर के माध्य फलांको में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों के माध्य फलांको में कोई सार्थक अंतर नहीं है एजबकि लिंग को सहचर के रूप में लिया गया है।

न्यादर्श–
इस शोध में जयपुर ज़िले के 4 उच्च माध्यमिक विद्यालय का चयन स्तरीत यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। प्रत्येक विद्यालय से 75–75 विद्यार्थी छात्र.छात्राओं का चयन किया गया। इस प्रकार कुल 300 छात्र छात्राओं का चयन किया गया।

अध्ययन विधि–प्रविधि एवं उपकरण

विधि–

अध्ययन विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के आधार पर अध्ययन करने की प्रणाली से हैं। अतः अध्ययन विधि वह मार्ग है जिस पर चलकर सत्य की खोज की जा सकती है। प्रस्तुत अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि का कार्य क्षेत्र दत्तों का संग्रहींकरण, सारणीबद्द करने के अतिरिक्त व्याख्या,तुलना, वर्गीकरण, मूल्यांकन तथा सामान्यीकरण भी है। यह विधि किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित न होकर समूह से सम्बंधित होती है। वर्तमान शैक्षिक समस्या का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि सर्वथा उपयुक्त रहती है। अतः इस अनुसंधान के लिए सर्वेक्षण विधि का ही प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी प्रविधि–

- प्रस्तावित शोध कार्य हेतु टी.टेस्ट सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग किया गया है।
- प्रस्तावित शोध कार्य हेतु कॉलपीयसरन का सहसंबंध गुणांक ज्ञात किया गया।

उपकरण–

- **अध्ययन की आदतें**– अध्ययन की आदतें उपकरण के लिए एमण्मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सनसनवाल के प्रमाणिक उपकरण का प्रयोग किया गया।
- **आकांक्षा स्तर**– आकांक्षा स्टार के लिए डॉण्महेश भार्गव एवं प्रोण्एमण्एण्शाह के प्रामाणिक उपकरणों का प्रयोग किया गया।

परिकल्पना 1. उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें एवं आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विद्यार्थी	N	M	SD	'T' Value	Df	Sig (2 tailed)	Remark
अध्ययन की आदतें	150	20.97	14.13	1.95	198	.05	**Significant**
आकांक्षा स्तर	150	21.84	17.42				

परिणाम 1:–

उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें एवं आकांक्षा स्तर का ज का मान 1.95 है, तथा df= 198 है। यह सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक है। इसकी सार्थकता का मान .05 है जो कि सार्थकता के स्तर .05 के बराबर है। अतः शून्य **परिकल्पना ''राजकीय उच्च माध्यमिक माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें एवं आकांक्षा स्तर के माध्य फलांको में सार्थक अन्तर नहीं होग'' निरस्त की जाती है।** यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में अध्ययन की आदतें एवं आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर होगा।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों का मान 21.84 हैं, जो कि विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों के माध्य फलांको के मान 20.97 से सार्थक रूप से ज्यादा है। यह कहा जा सकता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें एवं आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर पाया गया।

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों का मान, विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों के माध्य फलांकों के मान से अधिक है अर्थात राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों का मान एवं विद्यार्थियों के एवं आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों का मान में सार्थक अंतर पाया गया।

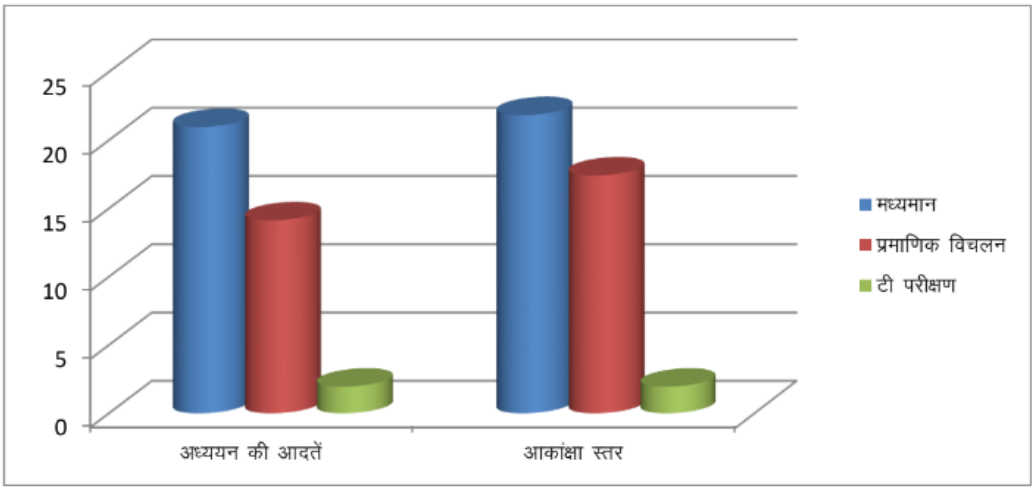

परिकल्पना 2 : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों में तुलनात्मक अध्ययन करना, जबकि लिंग को सहचर के रूप में लिया गया है।

अध्ययन की आदतें	N	Mean	Dfa	SS	MSS	fa-Value	Significance
छात्र	150	66.84	1	316.728	316.728		
छात्रायें	150	69.39	197	8764.106	59.217	5.349	**Significance**
कुल	**300**		**198**	**9080.834**			

परिणाम :– 2

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि *f* का मान 5.349 है, जो कि स्वतंत्रता के स्तर 1/198 एवं सार्थकता के स्तर 0.01 से अधिक है। अतः यह सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन की आदतें के माध्य प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है, जबकि लिंग को सहचर के रूप में लिया गया है। इस परिस्थिति में शून्य परिकल्पना **"उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, जबकि लिंग को सहचर के रूप में लिया गया है।"** निरस्त की जाती है। आगे सारणी से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों का मान 69.39 है जो कि उच्च माध्यमिक के छात्रों की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों के मान 66.84 से उच्च है।

अतः निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों का मान, उच्च माध्यमिक के छात्रों की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों के मान की तुलना में प्रभावशील रहा है, जबकि लिंग को सहचर के रूप में लिया गया है।

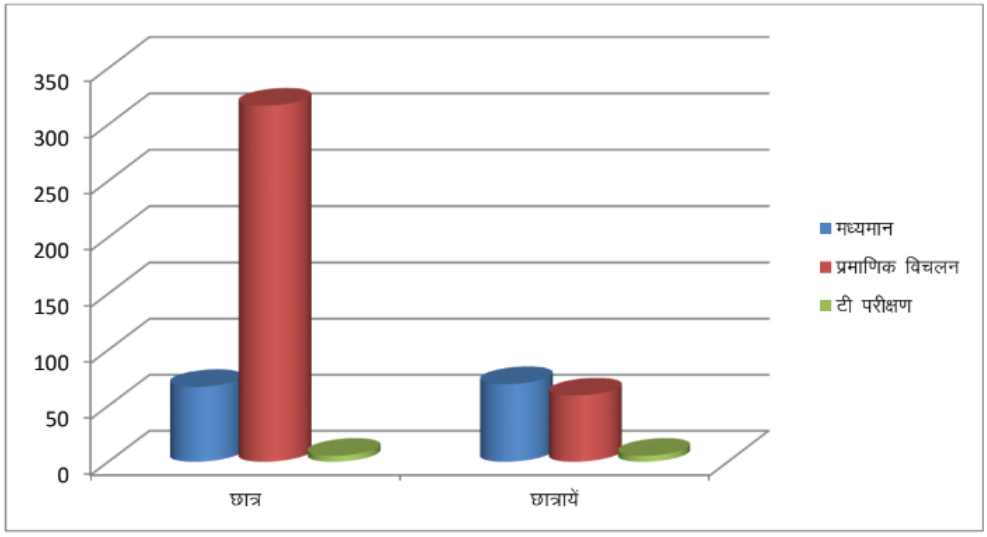

निष्कर्ष

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की विद्यार्थियों के माध्य फलांकों का मान, विद्यार्थियों की अध्ययन की आकांक्षा स्तर के आदतों के माध्य फलांकों के मान से अधिक है। अर्थात् राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों का मान एवं विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्य फलांकों का मान में सार्थक अंतर पाया गया।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों का मान, उच्च माध्यमिक के छात्रों की अध्ययन की आदतें के माध्य फलांकों के मान की तुलना में प्रभावशील रहा है, जबकि लिंग को सहचर के रूप में लिया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. पटेल (2023), पी.के. कला संकाय विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का जोखिम स्वीकारने, आकांक्षा स्तर एवं तर्क योग्यता के आधार पर अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
[2]. वर्मा (2022) माध्यमिक स्तर के अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व और आकांक्षा स्तर स्तर के प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर।
[3]. देव एवं ग्रवाल (2021) शैक्षणिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य, विद्यालय समायोजन तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का अन्तक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन पी.एच.डी. मनोविज्ञान, पंजाब वि.वि. ।
[4]. राज्यगुरू (2019) विधार्थियों की अध्ययन आदतें व आत्मिक बुद्धिमत्ता तथा आत्म संकल्पना के मध्य संबंध एजुकेशन अहमदाबाद। शोध पत्र, कामेश्वर कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अहमदाबाद।
[5]. सिंह (2018) पारिवारिक सम्बन्धों का समायोजन, तनाव, अध्ययन आदतें आत्म संकल्पना तथा शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, पी.एच.डी. शिक्षाशास्त्र, आगरा विश्वविद्यालय आगरा।

संबंधित इंटरनेट बेबसाईट

[1]. http://www.education.edu
[2]. http://www.education.nic.in
[3]. http://www.etuition.com